T.V. और मूवी

इस रिसाले में ...

- एक मुफ़्ती साहिब का ख़्वाब
- आठ बहारें
- निगाहे वली की तासीर
- 99 फ़ी सद घरों में टीवी
- T.V. का शर-ई इस्ते'माल
- मूवी का शर-ई हुक्म
- अमीरे अहले सुन्नत के तअस्सुरात

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

मक्त-बतुल मदीना® शो'बए इस्लाही कुतुब

सिलेकटेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, ख़ास बाज़ार, तीन दरवाज़ा,
अहमदाबाद-1. गुजरात-इन्डिया Ph: 91-79- 2539 11 68

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِالْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

T.V. और मूवी

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए मगर इस रिसाले को अव्वल ता आख़िर ज़रूर पढ़ें ।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

आ़शिक़े आ'ला ह़ज़रत, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल ***मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार*** क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دامت برکاتہم العالیہ अपने रिसाले ज़ियाए दुरूदो सलाम में फ़रमाने मुस्त़फ़ा صلی اللہ تعالی علیہ والہ وسلم नक़्ल फ़रमाते हैं, "जो मुझ पर शबे जुमुआ़ और जुमुआ़ के रोज़ सौ बार दुरूद शरीफ़ पढ़े, अल्लाह तआ़ला उस की सौ ह़ाजतें पूरी फ़रमाएगा ।"

(अत्तफ़्सीरदुर्रे मन्सूर, जि.1, स.604)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب !   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

वक़्त की ज़रूरत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! फ़ी ज़माना ह़ालात बड़ी तेज़ी के साथ तनज़्ज़ुली की त़रफ़ बढ़ते ही चले जा रहे हैं । एक त़रफ़ बे ***अ़मली*** का सैलाब अपनी तबाही मचा रहा है तो दूसरी त़रफ़ ***बद अ़क़ीदगी*** के ख़ौफ़नाक तूफ़ान की हौलनाकियां बरबादी के भयानक मनाज़िर पेश कर रही हैं ।

इन ह़ालात में मीडिया का त़र्ज़े अ़मल भी सब के सामने है । फ़ह़्ह़ाशी और उ़र्यानी फैलाने में इस का किरदार किसी से ढका छुपा नहीं, इस से भी ज़ियादा क़ाबिले तश्वीश बात येह है कि ग़ैर मुस्लिम क़ुव्वतें (ब शुमूल क़ादियानी गुरौह) और इस्लाह़ के नाम पर गुमराह कुन अ़क़ाइद का परचार करने वाले लोग भी इस ज़रीए़ को अपने मज़्मूम मक़ासिद के लिये मुसल्सल इस्ते'माल कर रहे हैं ।

www.dawateislami.net

"अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश" के सिल्सिले में तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक ***दा'वते इस्लामी*** की कारकर्दगी मोह़ताजे बयान नहीं और दा'वते इस्लामी के बानी और अमीर, शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल ***मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार*** क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دامت برکاتہم العالیہ से कौन वाक़िफ़ नहीं । आप دامت برکاتہم العالیہ वोह यादगार सलफ़ शख़्सिय्यत हैं जो ***कसीरुल करामत*** बुज़ुर्ग होने के साथ साथ इ़ल्मन व अ़मलन, क़ौलन व फ़े'लन, ज़ाहिरन व बात़िनन ***अह़कामाते इलाहिय्या की बजा आवरी और सुनने नबविय्या की पैरवी करने और करवाने की भी रौशन नज़ीर हैं ।*** आप अपने बयानात, तह़रीरी रसाइल, मल्फ़ूज़ात और मक्तूबात के ज़रीए़ अपने मुतअ़ल्लिक़ीन व दीगर मुसल्मानों को इस्लाहे़ आ'माल व अ़क़ाइद की तल्क़ीन फ़रमाते रहते हैं । आप के क़ाबिले तक़्लीद मिसाली किरदार, और ताबेए़ शरीअ़त बेलाग गुफ़्तार ने सारी ***दुन्या में लाखों मुसल्मानों बिल्ख़ुसूस नौ जवानों की ज़िन्दगियों में म-दनी इन्क़िलाब बरपा कर दिया है ।***

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! येह आप ही की कोशिशों का नतीजा है के इस मुख़्तसर से अ़रसे मैं दा'वते इस्लामी का पैग़ाम (ता दमे तह़रीर) दुन्या के तक़रीबन 60 मुमालिक में पहुंच चुका है । हज़ारों

मक़ामात पर सुन्नतों भरे हफ़्तावार इज्तिमाआ़त और सुन्नतों की तरबिय्यत के म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने वाले बे शुमार मुबल्लिग़ीन इस मुक़द्दस जज़्बे के तह़त इस्लाह़े उम्मत के कामों में मस्रूफ़ हैं कि "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ और दीगर आ़शिक़ाने रसूल की येह म-दनी कोशिशें अल्लाह व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में किस क़-दर मक़्बूल हैं इस का अन्दाज़ा इस ईमान अफ़रोज़ बिशारत से लगाइये।

बारगाहे रिसालत ﷺ में दा'वते इस्लामी की मक़्बूलिय्यत

हिन्द के एक ***मुफ़्ती साहिब*** مَدَّ ظِلُّہُ الْعَالِی ने ह़ल्फ़िया बताया कि मैं ना वाक़िफ़िय्यत और ग़लत़ फ़हमी के बाइ़स ***दा'वते इस्लामी*** और क़िब्ला ***अमीरे अहले सुन्नत*** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ का सख़्त मुख़ालिफ़ था। चूंकि मुझे बड़े बड़े जल्सों में तक़रीर का मौक़अ़ मिलता रहता है तो वहां भी मैं उन के ख़िलाफ़ ख़ूब बोलता था।

एक रात जब मैं सोया तो मेरी क़िस्मत अंगड़ाई ले कर जाग उठी। मैं ने देखा, एक नूरी तख़्त है जिस पर ***हुज़ूर पुर नूर*** शाफ़ेए़ यौमुन्नुशूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ फ़रमा हैं। सामने कसीर इस्लामी भाई मौजूद हैं जो सरों पर सब्ज़ इ़मामे का ताज सजाए सफ़ेद लिबास में मल्बूस एक बड़े सुतून को पकड़ कर हिलाने में मस्रूफ़ हैं और आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन्हें मुस्करा मुस्करा कर मुला-ह़ज़ा फ़रमा रहे हैं। मैं ने उन लोगों को पहचाना कि येह हुल्या तो दा'वते इस्लामी वालों का है। मैं ने सरकारे मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में अ़र्ज़ की कि येह कौन लोग हैं ? नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुस्कराते हुए इर्शाद फ़रमाया ***"येह मेरे आ़शिक़ हैं और इस्लाम दुश्मन क़ुव्वतों को जड़ों से उखाड़ कर फेंकने में मस्रूफ़ हैं।"*** जब मैं बेदार हुवा तो ***दा'वते इस्लामी*** और ***अमीरे अहले सुन्नत*** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ का मुह़िब्ब बन चुका था, मेरी ग़लत़ फ़हमियां दूर हो चुकी थीं और अब मैं तक़रीबन हर बयान में और तह़रीर के ज़रीए़ दा'वते इस्लामी की इन्क़िलाबी कारकर्दगी का चर्चा करता हूं।

www.dawateislami.net

T.V. पर बयान और अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ ! अल्लाह व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़ास करम से दा'वते इस्लामी ***नेकी की दा'वत*** को आ़म करने के लिये दिन रात मस्रूफ़े अ़मल है। आज जब कि मीडिया का दौर है तो ***नेकी की दा'वत*** को तेज़ी से फैलाने के लिये दा'वते इस्लामी ने जुर्अत मन्दाना क़दम उठाते हुए **T.V.** के ज़रीए़ अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ (बिग़ैर चेहरे के मह़ज़ आवाज़ के ज़रीए़) बयक वक़्त दुन्या के तक़रीबन 144 मुमालिक में पहुंचाने की तरकीब बनाई तो न सिर्फ़ पाकिस्तान बल्कि दुन्या के मुख़्तलिफ़ मुमालिक से भी मुबारकबाद के फ़ोन, ख़ुतूत़ और बहारें मौसूल होना शरूअ़ हो गईं जिन में से चन्द मुन्तख़ब बहारें अपने अल्फ़ाज़ में पेशे ख़िदमत हैं,

"फ़ैज़ाने दुआ" के आठ हुरूफ़ की निस्बत से 8 बहारें

(1) वालिद की नाराज़गी

बाबुल इस्लाम सिन्ध के शहर हैदरआबाद के मुबल्लिगे़ दा'वते इस्लामी ने बताया कि 3 र-मज़ानुल मुबारक सिने 1426 हिजरी को कश्मीर, सरहद और पंजाब के बा'ज़ मक़ामात पर आने वाले ख़ौफ़नाक ज़ल्ज़ले के मुतअस्सिरीन की दा'वते इस्लामी के तह़त होने वाली कसीर इम्दाद का सिल्सिला मेरे वालिद साहिब के इल्म में नहीं था। चूंकि ***दा'वते इस्लामी सियासी तह़रीक नहीं है*** लिहाज़ा अख़्बारात व मीडिया दा'वते इस्लामी की इन्फ़िरादी अ़ज़ीमुश्शान ख़िदमात को पेश करने के बजाए, अपने मफ़ादात के पेशे नज़र ख़बरें दे रहे थे। मेरे वालिद दा'वते इस्लामी की ज़ल्ज़ला ज़दगान की इम्दाद के सिल्सिले में ला इल्म होने के बाइस सख़्त नाराज़ थे और बार बार केहते कि, "दा'वते इस्लामी के अमीर ***अ़ल्लामा मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी*** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को फ़ोन करूंगा कि इस मौक़अ़ पर आप लोग क्यूं ख़ामोश हैं ?" ऐसे में क़िब्ला शैख़े त़रीक़त ***अमीरे अहले सुन्नत*** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने एक अहम्म फ़ैसला फ़रमाया और **T.V.** पर ब ज़रीए़ टेलीफ़ोन सुवालात के जवाबात देने के साथ जामेअ़ दुआ फ़रमाई। और ज़ल्ज़ला ज़दगान की इम्दाद के सिल्सिले में दा'वते इस्लामी की ख़िदमात बयान फ़रमाईं।

मेरे वालिद येह सुन कर न सिर्फ़ मुत्मइन हुए बल्कि इन्तिहाई नादिम भी थे कि मुझे तो आज मा'लूम हुवा कि ***दा'वते इस्लामी*** इस क़-दर अ़ज़ीमुश्शान त़रीक़े से ज़ल्ज़ला ज़दगान की ख़िदमत में मस्रूफ़ है।

www.dawateislami.net

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(2) आवाज़ में सोज़ो रिक़्क़त

सूबा सिन्ध के मुक़ीम एक अहम्म ज़िम्मादार इस्लामी भाई ने बताया कि **T.V.** पर ***अमीरे अहले सुन्नत*** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के इर्शादात व दुआ आने पर लोगों में बहुत अच्छे तअस्सुरात पाए गए और दा'वते इस्लामी की ज़ल्ज़ला ज़दगान के मुतअ़ल्लिक़ ख़िदमात लोगों से पोशीदा थीं, जिस के बाइस वोह बद गुमान हो रहे थे। ***अमीरे अहले सुन्नत*** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **T.V.** पर ब ज़रीए़ आवाज़ तश्रीफ़ ला कर लाखों मुसल्मानों को बद गुमानी, ग़ीबत, बोहतान तराशी जैसे कबीरा गुनाहों से बचाने के साथ साथ उन करोड़ों मुसल्मानों के दिलों में ख़ुशी दाख़िल करने का सामान भी किया जो आप के **T.V.** पर आने के ख़्वाहिशमन्द थे। उन का केहना है कि एक इन्तिहाई मॉडर्न घराने को देखा गया कि दौराने दुआ तमाम घरवाले हाथ उठा कर ***दुआ में मस्रूफ़ थे*** और उन की आंखों से आंसू जारी थे। बा'दे दुआ वोह घरवाले दीनी माह़ौल से दूर होने के बा वुजूद येह केहते दिखाई दिये कि, ***"इल्यास क़ादिरी साहिब*** مَدَّ ظِلُّهُ الْعَالِي ***की आवाज़ में किस क़-दर दर्द और सोज़ है हमारा तो रुवां रुवां कांप रहा था।"***

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(3) कराची यूनिवर्सिटी का तालिबे इल्म

बाबुल मदीना (कराची) यूनिवर्सिटी के एक तालिबे इल्म ने कुछ इस तरह की परची दी कि पहले मैं दा'वते इस्लामी वालों को पुराने ख़यालात पर मब्नी सोच का हामिल समझता था। इसी वजह से मैं उन से दूर था और बदज़न था। اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ***अमीरे अहले सुन्नत*** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के **T.V.** पर (महज़ आवाज़ के ज़रीए) दुआ़ करवाने और मूवी के ज़रीए तब्लीग़ की तैयारियों का सुन कर मैं मुत़मइन हो गया हूं, अब मेरा ज़ेहन साफ़ हो गया है।

लिहाज़ा मैं ने दा'वते इस्लामी के ***म-दनी माह़ौल*** से वाबस्ता होने की निय्यत कर ली है और येह भी निय्यत करता हूं कि दाढ़ी शरीफ़ रखने के साथ साथ इमामा शरीफ़ भी सजाऊंगा।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(4) सोहबते बद से नजात

एक इस्लामी भाई ने बताया कि हमारे पड़ौस में एक सुन्नी घराना बद अ़क़ीदा लोगों की सोह़बत के बाइ़स अ़क़ाइद के मुआ़मले में तज़ब्ज़ुब का शिकार हो चुका था। इसी घर के एक फ़र्द ने बताया कि जब **27** वीं शब ***अमीरे अहले सुन्नत*** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की दुआ़ **T.V.** पर शुरूअ़ हुई तो हम सब घरवाले शरीक हो गए, दुआ़ इस क़-दर पुर सोज़ थी कि सारे घर वाले रो रहे थे और मेरी ह़ालत सब से ज़ियादा ग़ैर थी।

اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुझ समेत तमाम घर वाले ***अमीरे अहले सुन्नत*** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से मुरीद हो कर ***अ़त्तारी*** बन गए। हम ने दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त में शिर्कत की भी निय्यत की है।

www.dawateislami.net

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(5) हैरत अंगेज़ तौबा

एक इस्लामी भाई ने बताया कि हमारे अ़लाके़ का एक शख़्स जो अ़लाक़े का बदनाम तरीन शख़्स था और अ़रसए दराज़ से जूए का अड्डा भी चला रहा था। **27** वीं शब भी आकड़े के नम्बर देने में मसरूफ़ था, इतने में क़रीब होटल पर चलने वाले **T.V.** पर ***अमीरे अहले सुन्नत*** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की दुआ़ शुरूअ़ हो गई।

दुआ़ की कशिश ने इस आकड़े के नम्बर देने वाले को भी अपनी त़रफ़ मुतवज्जेह कर लिया और वोह भी आ कर दुआ़ में शरीक हो गया। देखने वाले ह़ैरत ज़दा थे कि देखते ही देखते उस शख़्स पर जो शायद अपने किसी अ़ज़ीज़ की मौत पर भी न रोया हो ***इन्तिहाई रिक़्क़त त़ारी हो गई*** और वोह हिचकियां ले ले कर रोने लगा। दुआ़ ख़त्म हो चुकी थी मगर उस शख़्स पर रिक़्क़त त़ारी थी।

सुब्ह़ जब लोग फ़ज्र की नमाज़ के लिये पहुंचे तो येह देख कर ह़ैरान रह गए कि रात जो आकड़े के नम्बर दे रहा था। ***वोह शख़्स सर झुकाए पहली सफ़ में नमाज़ के लिये मौजूद था।***

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(6) मुख़ालिफ़ मुहिब्ब बन गया

हुसैनआबाद के मुक़ीम एक इस्लामी भाई ने बताया कि एक कॉलिज का क्लर्क ग़लत फ़हमी के बाइस ***दा'वते इस्लामी*** से बदज़न था और आए दिन मुझ से इख़्तिलाफ़ी गुफ़्तुगू करता और बे सरो पा ए'तेराज़ात कर के परेशान करता रहता। मैं उस से सामना होने पर अक्सर कतरा जाता क्यूं कि वोह ज़बान का बहुत तेज़ था।

27 र-मज़ानुल मुबारक को इत्तिफ़ाक़ से मेरा उन से सामना हो गया मैं नज़र बचा कर निकलने ही लगा था कि उस ने मुझे आवाज़ दी और केहने लगा : "मैं ने मौलाना ***मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी*** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की **T.V.** पर रिले (Relay) होने वाली दुआ़ में शिर्कत की, बड़ा सुरूर मिला और اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं भी अ़त्तारी बन गया हूं।"

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(7) क़ैदियों की तौबा

सूबए पंजाब के शहर "क़सूर" में ***दा'वते इस्लामी*** के मुबल्लिग़ीन की इन्फ़िरादी कोशिश की ब-र-कत से जेल इन्तिज़ामिया ने र-मज़ानुल मुबारक 1426 हि. के आख़िरी अ़शरे में 48 क़ैदियों को नफ़्ली ए'तिकाफ़ की इजाज़त दे दी। चुनान्चे येह मो'तकिफ़ क़ैदी सुब्ह़ 10 बजे से दो पहर 4 बजे तक फ़राइज़ व वाजिबात और सुन्नतें सीखने सिखाने के ह़ल्क़ों में शिर्कत किया करते। दौराने ए'तिकाफ़ **27** वीं शब बानिये दा'वते इस्लामी ***अमीरे अहले सुन्नत*** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की **T.V.** पर रिले (Relay) होने वाली दुआ़ सुनाने का जेल में इन्तिज़ाम किया गया था। जब दुआ़ शुरूअ़ हुई तो इन्तिहाई रिक़्क़त अंगेज़ मन्ज़र था, ***तमाम क़ैदी हाथ उठाए रो रो कर अपने गुनाहों पर नादिम हो कर तौबा कर रहे थे।*** इन सब ने आइन्दा गुनाह न करने का अ़ज़्म किया और अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के ज़रीए़ सिल्सिलए आ़लिय्या क़ादिरिय्या र-ज़विय्या अ़त्तारिय्या में दाख़िल हो कर अ़त्तारी भी बन गए।

www.dawateislami.net

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(8) होटल के मालिक की तौबा

एक इस्लामी भाई का बयान है कि जब मैं ***जेल*** में मो'तकिफ़ीन की ख़ैरख़्वाही के सिल्सिले में सह़री के वक़्त रोटियां लेने के लिये एक होटल पर पहुंचा तो देखा कि ***होटल के मालिक पर भी रिक़्क़त त़ारी थी।*** उस ने बताया कि अभी मैं भी **T.V.** पर होने वाली दुआ़ में शरीक था, दुआ़ के दौरान मुझे बहुत रोना आया और मैं ने अपने तमाम गुनाहों से भी तौबा कर ली है और आइन्दा बचने का अ़हद भी किया है आप दुआ़ करें कि अल्लाह इस्तिक़ामत दे। फिर उस ने रोटियों की रक़म में भी काफ़ी रिआ़यत की। उसी वक़्त होटल में मौजूद एक और शख़्स ने बताया कि मैं भी दुआ़ में शरीक था, मैं ***ज़िन्दगी में पहली बार गुनाहों को याद कर के इतना रोया हूं।*** येह केहते हुए उस ने हाथों हाथ ***तीन हज़ार रूपै*** सह़री व इफ़्त़ारी की मद में कुल्ली इख़्तियारात के साथ पेश किये।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه और मूवी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ता दमे तह़रीर ***अमीरे अहले सुन्नत*** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का न चेहरा **T.V.** पर देखा गया है न ही मूवी मन्ज़रे आ़म पर आई है, ताहम दुन्या के कसीर मुमालिक के लोगों का इस पर इस्रार है कि "जब कसीर मुफ़्तियाने किराम के मुत़ाबिक़ अज़ रूए शरअ़ जाइज़ उमूर की मूवी फ़िल्म देखना, बनाना और बनवाना जाइज़ है । लिहाज़ा ***अमीरे अहले सुन्नत*** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को इस्लाह़े उम्मत के अ़ज़ीम मक़्सद के पेशे नज़र अपनी मूवी मन्ज़रे आ़म पर लाने की इजाज़त दे देनी चाहिये । (मूवी बनाने या बनवाने और टीवी पर आने के बारे में मुफ़्तियाने किराम का मोक़फ़ मुला-ह़ज़ा करने के लिये इस रिसाले के आख़िर में दिया गया फ़त्वा पढ़ लीजिये ।)

म-दनी इल्तिजा : ***अमीरे अहले सुन्नत*** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की बारगाह में भी बार बार कुछ इस त़रह़ से अ़र्ज़ की जा रही है कि शर-ई इजाज़त से फ़ाइदा उठाते हुए सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ के मुक़द्दस जज़्बे के तह़त ब ज़रीए़ मूवी भी लोगों की इस्लाह़ की कोशिश फ़रमाइये । اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ सारी दुन्या इस की बरकात से मुस्तफ़ीज़ होगी ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه पर अल्लाह व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ख़ास करम है । इन की शख़्सिय्यत में अल्लाह तआ़ला ने ऐसी तासीर अ़त़ा फ़रमाई है कि ***कई गुनाहगार सिर्फ़ आप की ज़ियारत की ब-र-कत से ही ताइब हो जाते हैं,*** नेकूकारों की रिक़्क़ते क़ल्बी में इज़ाफ़ा होता है और आप की सोह़बत इस्लाह़े आ'माल का ज़रीआ़ बनती है । इस ज़िम्न में दो ईमान अफ़रोज़ सच्चे वाक़ेआ़त का ब ग़ौर मुत़ालआ़ फ़रमाएं ।

www.dawateislami.net

निगाहे विलायत की तासीर

एक इस्लामी भाई ने ह़ल्फ़िया बताय कि मेरी मुलाक़ात एक ***सब्ज़ इ़मामा*** सजाए हुए नौ जवान से हुई जिस के चेहरे पर इ़बादत का नूर चमक रहा था । उन्हों ने बताया कि एक शख़्स जो मुआ़शरे का इन्तिहाई बद किरदार शख़्स था और एक लिसानी तन्ज़ीम से उस की वाबस्तगी थी, वोह मुख़ालिफ़ ज़बान वालों से इन्तिहाई नफ़रत करता था । उस के शहर में एक मुख़ालिफ़ ज़बान का शख़्स पकोड़े बेचा करता था । उस का मा'मूल था कि वोह रोज़ाना उस से बीस 20 रूपै मालिय्यत के पकोड़े खाता और ठन्डे होने की सूरत में पहले मारपीट करता फिर उस से पकोड़े गर्म करवाया करता ।

एक दिन ***बाबुल मदीना*** (कराची) से उस के दोस्त की त़रफ़ से शादी का दा'वतनामा मिलने पर, जब येह शादी में शिर्कत के लिये कराची पहुंचा तो अपने दोस्त को देख कर ह़ैरान रह गया कि वोह दोस्त जो क़दम ब क़दम गुनाहों की मन्ज़िल पर एक अ़रसे तक साथ चलता रहा था ***उस के सर पर सब्ज़ इ़मामा शरीफ़ का ताज सजा*** हुवा था, ***चेहरे पर सुन्नत के मुत़ाबिक़ दाढ़ी*** थी और वोह सफ़ेद सुन्नतों भरे लिबास में मल्बूस निगाहें झुकाए खड़ा था । चूंकि वोह माज़ी में उस से इन्तिहाई बे तकल्लुफ़ था, लिहाज़ा उस ने तफ़रीह़ लेने के अन्दाज़ में उस पर चन्द जुम्ले कसे मगर उस का वोह दोस्त जो पहले इन्तिहाई ह़ाज़िर जवाब मश्हूर था, उस ने जवाब देने के बजाए मह़ज़

मुस्करा कर सर झुका लिया। उस का येह अन्दाज़ देख कर वोह मज़ीद कुछ न बोल सका।

चन्द दिन शादी की गहमा गहमी रही। हफ़्ते के दिन उस के दोस्त ने दा'वत दी कि मेरे पीरो मुर्शिद जो ***ज़माने के वली*** और तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की ग़ैर सियासी तह़रीक ***दा'वते इस्लामी*** के ***बानी*** और ***अमीर*** हैं, उन का बयान सुनने चलना है। जब वोह फ़ैज़ाने मदीना पहुंचे तो बयान इख़्तिताम के क़रीब था। बा'दे बयान अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की मुलाक़ात शुरूअ़ हुई और दोस्त ने मुलाक़ात के लिये उस का जेहन बनाया, तो वोह कहने लगा कि तुम जानते हो कि मैं ख़ुद शख़्सिय्यत हूं, मेरी मुलाक़ात के लिये तो ख़ुद क़ित़ार लगती है, मैं किसी से मिलूं! येह कैसे मुम्किन है? ख़ैर मुबल्लिग़ ने दोस्त पर इन्फ़िरादी कोशिश जारी रखी। आख़िर वोह इस शर्त़ पर ***अमीरे अहले सुन्नत*** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से मुलाक़ात के लिये तैयार हुवा कि क़ित़ार में जो शख़्स तीसरे नम्बर पर खड़ा है मुझे उस की जगह खड़ा किया जाए।

मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी ने क़ित़ार में खड़े शख़्स को सूरते ह़ाल बताई और अ़र्ज़ की "कि हो सकता है कि ***अल्लाह के वली*** से मुलक़ात व ज़ियारत से उस के दोस्त की ज़िन्दगी में ***म-दनी इन्क़िलाब*** बरपा हो जाए।" वोह मान गया और यूं उसे तीसरे नम्बर पर खड़ा कर दिया गया।

जब वोह ***अमीरे अहले सुन्नत*** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के सामने पहुंचा और उस ने नज़र उठा कर ***अमीरे अहले सुन्नत*** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के चेहरए मुबारक की त़रफ़ देखा और ***अमीरे अहले सुन्नत*** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की निगाहे विलायत जब उस पर पड़ी तो देखने वालों ने देखा कि वोह शख़्स जो कुछ देर पहले तक मुलाक़ात पर आमादा नहीं हो रहा था, अब उस की आंखों से आंसू बेह रहे थे और जिस्म पर कपकपाहट त़ारी थी। वोह कुछ देर ***अमीरे अहले सुन्नत*** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के मुबारक हाथों पर सर रखे रोता रहा फिर जज़्बात में आ कर खड़ा हो कर और हाथ फैलाए चीख़ चीख़ कर केहने लगा, "अब पूरी रात कोई नहीं मिलेगा, बस मैं देखूंगा, मैं मिलूंगा, और कोई नहीं देखेगा, और कोई नहीं मिलेगा।" वोह येह केहता जा रहा था और उस के आंसू बेहते जा रहे थे।

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने उसे बड़ी शफ़्क़त से समझाया कि न जाने लोग कहां कहां से मुलाक़ात के लिये आते हैं और हुक़ूक़ुल इबाद के भी मुआ़मलात हैं। और उस की कमर पर शफ़्क़त भरी थपकी दी तो वोह रोता हुवा आप के क़दमों में बैठ गया और काफ़ी देर तक वहीं बैठे बैठे रोता रहा। जब मुलाक़ात ख़त्म हुई तो वोह शख़्स ***अमीरे अहले सुन्नत*** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के क़दमों से उठ गया, इस दौरान वोह ***इमामा शरीफ़*** और ***दाढ़ी शरीफ़*** की निय्यत कर चुका था। वोह कमो बेश 15 दिन तक बाबुल मदीना में रहा और ***अमीरे अहले सुन्नत*** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर सह़री व इफ़्त़ारी में शिर्कत की सआ़दत भी पाता रहा।

उस के दिलो दिमाग़ को ऐसी ***पाकीज़गी*** नसीब हुई कि जब वोह वापस अपने शहर लौटा तो सर पर ***सब्ज़ इमामा शरीफ़*** का ताज सजाए हुए था और चेहरे पर ***दाढ़ी शरीफ़*** के कुछ बाल भी बढ़ चुके थे। इसी ह़ालत में वोह उस पकोड़े वाले (जिस को रोज़ाना तंग किया करता था) के पास जा कर भरे बाज़ार में उस के क़दमों में गिर पड़ा और रो रो कर मुआ़फ़ी मांगने लगा। सब लोग इस

www.dawateislami.net

हैरत अंगेज़ तब्दीली पर हैरान थे और हक़ीक़ते हाल जानने पर किसीने कहा कि

निगाहे अत्तार में येह तासीर देखी
बदलती हज़ारों की तक़्दीर देखी

फ़ौजी अफ़्सर के आंसू

एक इस्लामी भाई ने हल्फ़िया बताया कि तीन फ़ौजी अफ़्सरान **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की बारगाह में मुलाक़ात की ग़-रज़ से हाज़िर हुए तो एक मुबल्लिग़ ने इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए उन्हें म-दनी माहौल की ब-र-कतें बताईं। फिर ***अमीरे अहले सुन्नत*** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के आस्ताने में खाने की तरकीब हुई।

उन इस्लामी भाई का केहना है कि ***अमीरे अहले सुन्नत*** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه खाना तनावुल फ़रमा रहे थे, दीगर अफ़्राद भी खाने में मस्रूफ़ थे कि इतने में ***अमीरे अहले सुन्नत*** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के साथ खाने में शरीक एक फ़ौजी अफ़्सर के रोने की आवाज़ सुन कर मैं ने जैसे ही पलट कर देखा तो येह देख कर हैरान रह गया कि ***फ़ौजी अफ़्सर के पूरे जिस्म पर लर्ज़ा त़ारी था और उस की हिचकियां बंधी हुई थीं।*** वोह टिकटिकी बांधे ***अमीरे अहले सुन्नत*** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के चेहरे मुबारक की ज़ियारत कर रहा था और रोता जा रहा था जब कि निवाला उस के हाथ से गिर चुका था। कमरे में अ़जीब रिक़्क़त अंगेज़ माहौल बन गया। और हैरत की बात येह थी कि ***अमीरे अहले सुन्नत*** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने (अपनी ज़बान से) न तो कोई बयान फ़रमाया और न ही आप ने कोई मल्फ़ूज़ात इर्शाद फ़रमाए बल्कि आप तो खाने में मस्रूफ़ थे मगर वोह फ़ौजी अफ़्सर सिर्फ़ आप के चेहरए मुबारक को देख देख कर रोए जा रहा था। वाक़ेई ***"वलिय्ये कामिल"*** की पहचान किसी ने सह़ीह़ बताई, कि जिसे देख कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की याद आ जाए।

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस से मा'लूम हुवा कि मूवी के ज़रीए अगर पूरी दुन्या को ***अमीरे अहले सुन्नत*** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ज़ियारत की सआ़दत मिल जाए तो न जाने कितने लोगों की बिगड़ी बन सकती है और हज़ार हा लोगों की ज़िन्दगियों में म-दनी इन्क़िलाब बरपा हो सकता है।

तक़्वा और परहेज़गारी के अन्वार

फ़ी ज़माना **T.V.** पर आने वाले अक्सर लोग उ़मूमन लफ़्ज़ों के खेल के माहिर और ज़ाहिरी शख़्सिय्यत के ह़ामिल होते हैं। ऐसे ह़ालात में अगर ज़माने के वली सिल्सिलए आ़लिय्या क़ादिरिय्या के अ़ज़ीम बुज़ुर्ग यादगारे सलफ़ शख़्सिय्यत, शैख़े त़रीक़त, ***अमीरे अहले सुन्नत*** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ***जिन का चेहरए मुबारक तक़्वा परहेज़गारी और इबादत के अन्वार से मुनव्वर है,*** जिन की ज़ियारत करने वाले की ज़बान पर बे साख़्ता "سُبْحٰنَ اللّٰه" जारी हो जाता है, आंखें जज़्बाते तअस्सुर से भीग जाती हैं, जिन के ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ और इ़श्क़े रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की कैफ़िय्यत व रिक़्क़त सख़्त से सख़्त दिलों को भी नर्म कर देती है, जिन की सोह़बत ज़रीअ़ए इस्लाहे आ'माल है, करोड़ों क़ुलूब जिन की मह़ब्बत में गरिफ़्तार और ***आंखें ज़ियारत के लिये बे क़रार हैं,*** मूवी की शर-ई इजाज़त से फ़ाइदा उठाते हुए उम्मत की इस्लाह़ के मुक़द्दस जज़्बे के

तह़त **V.C.D.** के ज़रीए़ दुन्या के सामने जल्वा फ़रमा हों तो सारी दुन्या में म-दनी इन्क़िलाब बरपा हो सकता है। (اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ)

निन्नान्वे फ़ी सद घरों में T.V.

اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ***दा'वते इस्लामी*** **T.V.** के ज़रीए़ फैलने वाली फ़ह़्हाशी व उ़र्यानी के ख़िलाफ़ बहुत पहले ही से अ़मली जिहाद में मस्रूफ़ है। जिस की ब-र-कत से एक बड़ी ता'दाद में **T.V.** घरों से बाहर हुए। मगर इस के बा वुजूद **T.V.** ***ख़रीदने वालों की ता'दाद कम होने के बजाए मज़ीद बढ़ती जा रही है।*** अब आ़लम येह है कि इस वक़्त बद क़िस्मती से निन्नान्वे फ़ी सद से ज़ाइद घरों में **T.V.** दाख़िल होने में काम्याब हो चुका है। और दिन रात गुनाहों का बाज़ार गर्म है।

रहे वोह एक फ़ी सद लोग जिन के घरों में **T.V.** नहीं है तो वोह भी किसी न किसी सबब म-सलन किसी ह़ादिसे या ना गहानी आफ़त की सूरत में इस की तस्वीरी झल्कियां देखने के लिये **T.V.** पर नज़र डाल ही लेते हैं। बिल्फ़र्ज़ अगर वोह इस सूरत में भी अपना दामन **T.V.** से बचा लेते हों तो भी इन में अक्सर ऐसे होते होंगे जो अख़्बार तो पढ़ते ही होंगे और अख़्बार पढ़ने वाले के लिये इस में छपने वाली ना मह़रम औ़रतों की तसावीर से निगाह बचा लेना बेह़द मुश्किल अम्र है। ***इस से बद निगाही की नुहूसत से ह़िफ़ाज़त में दुश्वारी का अन्दाज़ा लगाया जा सकता है।***

T.V. का शर-ई इस्ते'माल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! जब **T.V.** पहले ही से घरों में दाख़िल है और इस का ना जाइज़ इस्ते'माल भी भरपूर त़रीक़े से जारी है और इस में इज़ाफ़ा ही होता चला जा रहा है और इसे घरों से निकालने की फ़िल्ह़ाल कोई सूरत नज़र नहीं आ रही है। ऐसे नाज़ुक ह़ालात में कि जब शरीअ़त में ***''मूवी''*** की इजाज़त की सूरत निकलती है, अगर क़िब्ला शैख़े त़रीक़त ***अमीरे अहले सुन्नत*** मूवी के ज़रीए़ अपने पुर तासीर सुन्नतों भरे बयानात फ़रमाएंगे तो अल्लाह तआ़ला की रह़मत से उम्मीद है कि इन बयानात की ब-र-कत से लोग फ़िल्में, डिरामे, गाने बाजे वग़ैरा देखने सुनने के बजाए اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ **T.V.** पर सिर्फ़ सह़ीहुल अ़क़ीदा सुन्नी उ़-लमा के बयानात या ह़म्दो ना'त सुनना शुरूअ़ कर देंगे और اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ **T.V.** का इस्ते'माल शर-ई इजाज़त तक मह़दूद हो जाएगा।

इस के इ़लावा वोह लोग जो **T.V.** के ना जाइज़ इस्ते'माल की नुहूसत के बाइ़स फ़ैशन परस्ती और गुनाहों के दलदल में धंसते चले जा रहे हैं, ***अमीरे अहले सुन्नत*** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के सुन्नतों भरे इस्लाह़ी बयानात और पुर तासीर जल्वों की ब-र-कत से उन्हें **T.V.** के जाइज़ इस्ते'माल की ब-र-कत से ताइब हो कर न सिर्फ़ फ़राइज़ व वाजिबात पर कारबन्द होना नसीब होगा बल्कि वोह सुन्नतों की चलती फिरती तस्वीर बन कर आ़शिक़ाने रसूल के हमराह म-दनी इन्आ़मात की ख़ुश्बू से मुअ़त्त़र मुअ़त्त़र सुन्नतों भरे म-दनी क़ाफ़िलों के ज़रीए़ इस कोशिश में मस्रूफ़ हो जाएंगे कि ***मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।*** اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

www.dawateislami.net

सुवाल : ***जिन घरों में T.V. नहीं वोह क्या करें ?***

जवाब : जिन ख़ुश नसीब लोगों के घरों में **T.V.** अभी तक दाख़िल नहीं हुवा, उन्हें अब भी **T.V.** ***घर में लाने की क़त्अ़न ह़ाजत नहीं,*** वोह इस बात को पेशे नज़र रखें कि **T.V.** में बयान वग़ैरा के ज़रीए़ तो ***उन लोगों तक पहुंचना मक़्सूद है जिन के घरों में T.V. मौजूद है और वोह इस के ना जाइज़ इस्ते'माल के ज़रीए़ बरबादी के सामान कर रहे हैं ।*** लिहाज़ा अगर कोई ***अमीरे अहले सुन्नत*** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ज़ियारत करना चाहे और सुन्नतों भरे बयानात से मुस्तफ़ीज़ होना चाहे तो वोह ब आसानी कम्प्यूटर के ज़रीए़ अपनी इस ***मुबारक ख़्वाहिश*** को अ़मली जामा पेहना सकता है ।

अमीरे अहले सुन्नत और T.V. पर बयान

जब शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ***मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार*** क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से अ़र्ज़ की गई कि आप पहले **T.V.** को घर से निकालने का मश्वरा इर्शाद फ़रमाते थे और कई इस्लामी भाइयों ने निकाल भी दिये मगर अब आप ख़ुद ही **T.V.** पर बयान फ़रमाने लगे हैं तो क्या एक बार फिर हम घरों में **T.V.** बसा लें ? ***इस पर आप ने जवाब इर्शाद फ़रमाया,***

T.V. के नुक़्सानात

अफ़्सोस ! सद करोड़ अफ़्सोस ! आजकल दुन्या के करोड़ों मुसल्मानों के घरों में **T.V.** है और इस की वजह से बुराइयां बढ़ती चली जा रही हैं ।

www.dawateislami.net

T.V. पर एक त़रफ़ फ़िल्मों, डिरामों वग़ैरा के ज़रीए़ अख़्लाक़ व किरदार तबाह किया जा रहा है तो ***दूसरी त़रफ़ इस्लाम दुश्मन अ़नासिर खुल्लम खुल्ला इस्लाम के ख़िलाफ़ ज़हर उगल रहे हैं ।*** नीज़ बा'ज़ लोग इस्लाम का लुबादा ओढ़ कर इस्लाम को मॉडर्न अन्दाज़ में पेश करने की नापाक साज़िशों के ज़रीए़ मुसल्मानों के ईमानों को लूटने में मश्ग़ूल हैं । अल ग़-रज़ **T.V.** के ज़रीए़ बद अ़मली और बद अ़क़ीदगी फैलाने का सिल्सिला ज़ोरों पर है, ऐसे ना मुसाइ़द ह़ालात में **T.V.** घर में रखना ही नहीं चाहिये ***अगर हो तो भी फ़ौरी त़ौर पर इस को निकाल देना ज़रूरी है ।*** रहे वोह लोग जिन को **T.V.** से रोकना मुम्किन नहीं, ऐसों की इस्लाह़ के लिये उ़-लमाए किराम को ज़रूर कोई राह निकालनी चाहिये ।

रव़ौफ़नाक ज़ल्ज़ला

ता दमे अ़र्ज़ सिर्फ़ दो मरतबा वोह भी फ़क़त आवाज़ की ह़द तक मैं **T.V.** पर आया हूं । पहली बार सबब येह हुवा कि 3 र-मज़ानुल मुबारक सिने 1426 हिजरी को सुब्ह़ 8:45 पर पाकिस्तान के बा'ज़ मक़ामात में ख़ौफ़नाक ज़ल्ज़ला आया, जिस ने तबाही मचा कर रख दी, कमो बेश दो लाख अफ़राद फ़ौत हुए, ज़ख़्मियों और माली नुक़्सानात का तो कोई शुमार ही नहीं, मुसल्मानों को दरपेश आने वाली इस क़ियामते सुग़रा और आफ़ते कुब्रा के मौक़अ़ पर اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ***दा'वते इस्लामी की ख़िदमात मिसाली*** थीं मगर "इलेक्ट्रोनिक मीडिया" से दूरी के बाइ़स आ़म मुसल्मानों को इस की इत्तिलाअ़ नहीं थी और लोग बद गुमानियां कर रहे थे कि ऐसे आड़े वक़्त में

अहले हक़ की सब से बड़ी मज़हबी तहरीक, ***दा'वते इस्लामी क्यूं ख़ामोश है !*** चुनान्चे तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तहरीक, दा'वते इस्लामी के अ़ज़ीमतर मफ़ाद की ख़ातिर मैं ने बैतुल फ़ना (येह अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के आस्ताने का नाम है) से फ़ोन पर **T.V.** वालों के सुवालात के जवाबात दिये और दुआ़ भी की जो ग़ालिबन 144 मुल्कों में ब राहे रास्त (LIVE) सुनी गई । ज़ल्ज़ला ज़दगान की इम्दाद की तफ़्सीलात सुन कर दुन्या भर के मुसल्मान اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ झूम उठे । म-सलन

बम्बई की मस्जिद में म-दनी काम

मुझे बम्बई (हिन्द) से एक इस्लामी भाई ने फ़ोन पर बताया कि हमारे यहां एक मस्जिद में ***दा'वते इस्लामी*** पर पाबन्दी थी । ज़ल्ज़ला ज़दगान की इम्दाद से मुतअ़ल्लिक़ **T.V.** पर बयान Relay होने के बा'द मज़्कूरा मस्जिद की इन्तिज़ामिया ने अज़ ख़ुद ज़िम्मादारान से राबिता़ कर के बताया कि हम ने इल्यास क़ादिरी का **T.V.** पर बयान सुना, हमें क्या मा'लूम था कि आप हज़रात आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दुखियारी उम्मत के इस क़-दर हमदर्द हैं, दुआ़ भी सुनी और आज तक ऐसी दुआ़ कभी नहीं सुनी थी, अब ***दा'वते इस्लामी*** के लिये हमारी मस्जिद के दरवाज़े 25 घन्टे खुले हैं । बराए करम ! सुन्नतों भरे दर्सो बयान के ज़रीए़ हमारे यहां के नमाज़ियों को फ़ैज़याब कीजिये ।

27 वीं शब की दुआ़

जिन चेनल्ज़ पर बयान रिले हुवा था, लोगों ने उन की भी खूब पज़ीराई की लिहाज़ा उन्हों ने हुस्ने ज़न की बिना पर इजाज़त के बिग़ैर ही 27 वीं शबे र-मज़ानुल मुबारक सिने 1426 हिजरी की दुआ़ बराहे रास्त रिले करने के ए'लानात जारी कर दिये । म-दनी मर्कज़ ने **T.V.** वालों के हुस्ने ज़न की लाज रखते हुए बा'ज़ तह़फ़्फ़ुज़ात तै़ कर के इजाज़त दे दी । तह़फ़्फ़ुज़ात में येह भी शामिल था कि दुआ़ वग़ैरा से क़ब्ल न मूसीक़ी होगी न ही औ़रत की तस्वीर व आवाज़ में ए'लान किया जाएगा और दौराने दुआ़ इश्तिहार वग़ैरा भी नहीं दिया जाएगा । चुनान्चे ***दा'वते इस्लामी*** के आ़लमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने बाबुल मदीना कराची में होने वाले ह़-रमैन त़य्यिबैन के बा'द दुन्याए इस्लाम के ग़ालिबन सब से बड़े ए'तिकाफ़ (जिस में कमो बेश 3100 मो'तकिफ़ीन थे) में र-मज़ानुल मुबारक सिने 1426 हिजरी की 27 वीं शब को अन्दाज़न लाखों मुसल्मानों को गुनाहों से तौबा करवा कर नमाज़ों की पाबन्दी और दीगर गुनाहों से बचने का अ़हद ले कर सरकारे ग़ौसे पाक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का मुरीद करवाया गया और वहां पढ़ी जाने वाली ''अल वदाअ़ माहे र-मज़ान'' और इस के बा'द होने वाली दुआ़ की सिर्फ़ आवाज़ **T.V.** के बा'ज़ चेनल्ज़ पर बराहे रास्त RELAY की गई ।

T.V. पर चेहरा दिखाना कैसा ?

T.V. के पर्दए स्क्रीन पर सूरत के साथ ज़ाहिर हो कर नेकी की दा'वत पेश करना मुतअ़द्दद उ़-लमाए अहले सुन्नत के नज़्दीक अगर्चे शर-अ़न दुरुस्त है ता हम इस को देखने के लिये घर में **T.V.** हरगिज़ मत लाइये क्यूंकि **T.V.** के अक्सर प्रोग्राम ग़ैर शर-ई होते हैं, मैं जिस त़रह़ पेहले **T.V.** का मुख़ालिफ़ था اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इसी त़रह़ अब भी मुख़ालिफ़ हूं, **T.V.** ने मुसल्मानों को अ़मली

www.dawateislami.net

त़ौर पर तबाह करने में इन्तिहाई घिनौना किरदार सर अन्जाम दिया है। इस की हलाकत ख़ैज़ियों की झल्कियां मेरे बयान के तह़रीरी रिसाले "**T.V.** की तबाहकारियां" में देखी जा सकती हैं।

आज कल **T.V.** मुआ़शरे का गोया جزوِلا ینفک (या'नी कभी जुदा न होने वाला हि़स्सा) बन चुका है और करोड़ों मुसल्मान **T.V.** पर नाचगाने और फ़िल्म बीनी के गुनाह में मश्ग़ूल हैं, हर त़रफ़ बद अ़क़ीदगियों और बद आ'मालियों का सैलाब है, ऐसे में अगर **T.V.** के ज़रीए़ उन के घरों के अन्दर दाख़िल हो कर ए'लाए कलिमतुल ह़क़ (या'नी आवाज़े ह़क़ बुलन्द करने) का मौक़अ़ मिलता हो तो शरीअ़त के दाइरे में रह कर नेकी की दा'वत देना बेह़द मुफ़ीद है। जैसा कि र-मज़ानुल मुबारक सिने 1426 हिजरी में म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना के एक मो'तकिफ़ ने मुझे (अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ को) कुछ इस त़रह़ लिख कर दिया कि हमारे घर का माह़ौल इस क़-दर दीन से दूर था कि माहे र-मज़ानुल मुबारक में भी नमाज़ रोज़ों का ख़ास ज़ेहन न था। दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ौल की ब-र-कत से घर भर में अकेला मैं ही अ़-मलन मज़हबी ज़ेहन का था। र-मज़ानुल मुबारक में जब आप का (अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ का) बयान आया तो मैं ने **T.V.**ऑन कर के क़स्दन उस की आवाज़ ख़ूब बढ़ा दी, घरवाले मुतवज्जेह हो कर इकट्ठे हो गए जब दुआ़ हुई तो सब पर एक दम रिक़्क़त त़ारी हो गई और सब ने रो रो कर गुनाहों से तौबा की। दुआ़ ख़त्म होने के बा'द मेरे बड़े भाई ने पुर जोश लहजे में कहा, ***आज के बा'द फ़िल्में डिरामे और गाने बाजों के लिये कोई भी T.V. ऑन नहीं करेगा।*** اِن شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ

www.dawateislami.net

जहां तक घर में **T.V.**. बसाने का तअ़ल्लुक़ है तो इस ज़िम्न में अ़र्ज़ है कि सिर्फ़ मज़हबी प्रोग्राम देखने सुनने की निय्यत से भी घर में **T.V.** बसाने के ह़क़ में मैं नहीं हूं, क्यूं कि **T.V.** के मनफ़ी असरात (SIDE EFECTS) बहुत ज़ियादा हैं म-सलन आप को अगर तिलावत भी सुननी होगी तो **T.V.** खोलते ही मुराद बर आ जाना ज़रूरी नहीं इस के लिये शायद कई चेनल्ज़ से गुज़रना पड़ेगा और यूं न चाहते हुए भी म्यूज़िक सुनने और त़रह़ त़रह़ के बेहूदा मनाज़िर देखने से वासित़ा पड़ सकता है! नीज़ मज़हबी प्रोग्राम भी अक्सर गुनाहों के बिग़ैर नहीं देखा जा सकता क्यूं कि उ़मूमन इस के अव्वल आख़िर बल्कि बीच में भी बे पर्दा औ़रतों पर मुश्तमिल इश्तिहारात चलाए जाते हैं। बिल्फ़र्ज़ आप ने मज़हबी प्रोग्राम देखने के लिये **T.V.** लिया और फ़िल्मों, डिरामों और बद अ़क़ीदा लोगों की तक़ारीर से बच भी गए तब भी घर में दीगर अफ़राद के इब्तला का शदीद अन्देशा है। (माख़ूज़ अज़ रिसाला "अमीरे अहले सुन्नत के **T.V.** के बारे में तअस्सुरात")

मूवी का शर-ई़ हुक्म

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़-लमाए दीन व मुफ़्तियाने शरए़ मतीन इस बारे में कि ***मूवी बनाना और बनवाना कैसा है ?*** बहुत से उ़लमा से इस के बारे में सुना था कि येह ना जाइज़ है लेकिन इस वक़्त कसीर ता'दाद में उ़-लमा टीवी पर आते हैं या अपने जल्सों, मह़फ़िलों, ना'त ख़्वानियों की मूवी बनवाते हैं और येह मूवीज़ बाज़ार में आ़म मिलती

हैं । आप इस मस्अले के बारे में अपनी तह्क़ीक़ से मुत्तलअ़ फ़रमाएं ।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ؕ

الجواب بعون الوهاب اللهم هداية الحق والصواب

टीवी, वीडियो के मस्अले में उ़-लमा की आराअ में इख़्तिलाफ़ है चुनान्चे बा'ज़ ने इसे तस्वीर पर क़ियास करते हुए ना जाइज़ क़रार दिया और बा'ज़ ने तस्वीर होने की नफ़ी की और इसे आईने के अ़क्स की मिस्ल क़रार देते हुए ***जाइज़ क़रार दिया*** कि जैसे आईने में नज़र आने वाला अ़क्स तस्वीर के हुक्म में नहीं बल्कि वहां अस्लन तस्वीर ही नहीं तो यहां भी येही हुक्म है। चुनान्चे टीवी स्क्रीन पर शुआ़ओं से बनने वाले अ़क्स पर तस्वीर का हुक्म दिया जाना ग़लत़ है। बहर ह़ाल अगर येह साबित हो जाए कि टीवी स्क्रीन पर नज़र आने वाला अ़क्स तस्वीर ही है तो अज़ रूए क़ियास इस पर हुक्मे हुर्मत ही होगा। और अगर इस के बर अ़क्स तस्वीर साबित न हो तो जाइज़ उमूर की मूवी फ़िल्म जाइज़ होगी। और इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान व सदरुश्शरीआ़ बदरुत्तरीक़ा मुफ़्ती मुह़म्मद अम्जद अ़ली आ'ज़मी رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی की कुतुब से येही ज़ाहिर है कि शुआ़ओं से बनने वाले उ़कूस तस्वीर नहीं हैं।

सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत अ़ल्लामा मौलाना अश्शाह ***अह़मद रज़ा ख़ान*** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن इर्शाद फ़रमाते हैं :

"سئلت غمن صلى وامامه مر آة فأ جبت با لجواز آخذاامما ههنا
إذ الـمر آة لم تعبدو لا الشبح المنطبع فيها ولا هومن صنيع الكفار
نعم ان كان بحيث يبدوله فيه صورته وافعاله ركوعاو سجودا
وقياماوقعودا وظن ان ذلك يشغله فاذن لا ينبغى قطعا"۔

www.dawateislami.net

(जद्दुल मुम्तार, जि.1, स.311,312, इदारा तह्क़ीक़ाते इमाम अह़मद रज़ा कराची)

मुझ से ऐसे शख़्स के बारे में सुवाल किया गया कि जिस ने आईने के सामने नमाज़ पढ़ी तो मैं ने यहां बयान कर्दा (शरह़ मुन्निया के) क़ौल से अख़ज़ करते हुए जवाज़ का फ़त्वा दिया। क्यूंकि न तो आईने की ***इ़बादत*** की जाती है और न इस में कोई ***सूरत*** छपी होती है और न येह कुफ़्फ़ार की मस्नूआ़त (या'नी कुफ़्फ़ार के शआ़इर) से है। हां अगर नमाज़ पढ़ने के दौरान इसे अपनी ह़रकात मिस्ल रुकूअ़ व सुजूद व क़ियाम व क़ुऊ़द नज़र आती हो और येह ख़याल करता है कि येह इसे नमाज़ से मश्ग़ूल और ग़ाफ़िल कर देंगी तो इसे आईने के सामने हरगिज़ नमाज़ नहीं पढ़नी चाहिये।

यूंही सदरुश्शरीआ़ बदरुत्तरीक़ा मुफ़्ती ***मुह़म्मद अम्जद अ़ली आ'ज़मी*** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से जब इसी क़िस्म का सुवाल किया गया तो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इर्शाद फ़रमाया कि, ''आईना सामने हो तो नमाज़ में कराहत नहीं है कि सबबे कराहत तस्वीर और वोह यहां मौजूद नहीं। और अगर इसे तस्वीर का हुक्म दें तो आईने का रखना भी मिस्ल तस्वीर ना जाइज़ हो जाए ह़ालांकि बिल इज्माअ़ जाइज़ है। और ह़क़ीक़ते अम्र येह है कि वहां तस्वीर होती ही नहीं बल्कि ख़ुतूते शुआ़ई आईने की सक़ालत की वजह से लौट कर चेहरे पर आते हैं गोया येह शख़्स अपने को देखता है न येह कि आईने में इस

की सूरत छपती है।''

(फ़तावा अम्जदिय्या, जि.1, स.184, मत्बूआ़ : मक्तबए र-ज़विय्या कराची)

इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो ***मिल्लत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान*** عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ الرَّحۡمٰن और सदरुश्शरीआ़ बदरुत्तरीक़ा मुफ़्ती अम्जद अ़ली आ'ज़मी رَحِمَہُمُ اللہُ تَعَالٰی की इ़बारात से येह बिल्कुल वाज़ेह़ है कि शुआ़ओं से बनने वाले उ़कूस तस्वीर नहीं हैं। लिहाज़ा टीवी और विडियो फ़िल्म का जाइज़ इस्ते'माल भी जाइज़ हुवा कि इन में नज़र आने वाले पैकर भी शुआ़ओं ही पर मुश्तमिल होते हैं। ख़ुसूसन सदरुश्शरीआ़ رَحۡمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ के फ़त्वा से दर्जे ज़ैल उमूर ज़ाहिर हुए।

(अव्वल) आईने में नज़र आने वाला अ़क्स ***तस्वीर के हुक्म में नहीं*** बल्कि वहां अस्लन तस्वीर हीं नहीं।

(दुवुम) शुआ़ओं से बनने वाले पैकर का नाम ***तस्वीर नहीं है*** बल्कि अ़क्स है अगर्चे वोह ज़ाहिरी तौ़र पर तस्वीर के मिस्ल ही क्यूं न हो।

(सिवुम) जब शुआ़ओं से बनने वाला पैकर तस्वीर नहीं तो ख़्वाह आईने में ऐसा पैकर बने या ख़ारिजे आईना किसी और चीज़ पर, वोह ***तस्वीर नहीं*** क्यूंकि आईने में बनने वाले पैकर से तस्वीर की नफ़ी आईने की वजह से नहीं बल्कि शुआ़अ होने की वजह से है। येही वजह है कि पानी ***पर और चमकदार शै म-सलन स्टील और पॉलिश किये हुए फ़र्श पर बनने वाले वाज़ेह़ अ़क्स को न तो तस्वीर समझा जाता है और न ही इस पर तस्वीर का इ़त्लाक़ कर के इसे ह़राम कहा जाता है*** बल्कि इसे आईने के अ़क्स के मिस्ल समझा जाता है।

www.dawateislami.net

ह़ालांकि आईने और इन अश्या के अज्ज़ाए तरकीबी का फ़र्क़ किसी ज़ी अ़क़्ल से हरगिज़ पोशीदा नहीं है। लिहाज़ा ज़ाहिर हुवा कि इन अश्या में बनने वाले उ़कूस को तस्वीर के हुक्म में सिर्फ़ इस लिये नहीं दाख़िल किया जाता कि येह शुआ़ओं से बनते हैं। जैसा कि सदरुश्शरीआ़ رَحۡمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की इ़बारत से ज़ाहिर है।

ह़ज़रते ग़ज़ालिये दौरां अ़ल्लामा ***सय्यिद अह़मद सई़द काज़िमी*** رَحۡمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ***जाइज़ विडियो फ़िल्म के जवाज़ के क़ाइल थे।*** और आप عَلَیۡہِ الرَّحۡمَۃ ने टीवी और मूवी के जवाज़ पर लिखी गई किताब की ज़ोरदार अन्दाज़ में तस्दीक़ फ़रमाई। चुनान्चे आप رَحۡمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने न सिर्फ़ शहज़ादए मुह़द्दिसे आ'ज़मे हिन्द किछौछवी (رَحۡمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ) ह़ज़रत अ़ल्लामा ***मुह़म्मद म-दनी मियां अशरफ़ी*** مَدَّ ظِلُّہُ العَالِیۡ की विडियो और टीवी के शर-ई इस्ते'माल से मुतअ़ल्लिक़ तह़क़ीक़ की तस्दीक़ फ़रमाई बल्कि इस तह़क़ीक़ पर उन्हें रईसुल मुह़क़्क़िक़ीन के शानदार लक़ब से भी नवाज़ा। आप رَحۡمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं,

''रईसुल मुह़क़्क़िक़ीन ह़ज़रत अ़ल्लामा सय्यिद मुह़म्मद म-दनी अल अशरफ़ियुल जीलानी دامت معالیہم وعلیکم السلام ورحمۃ اللہ تعالیٰ وبرکاتہ मिज़ाजे अक़्दस ?''

ह़ज़रत का मक़्दूर गिरामी शरफ़ सुदूर लाया। याद फ़रमाई का बेह़द शुक्रिया। जनाब के इरसाल कर्दा इस्तिफ़्ता व फ़तावा को ब ग़ौर सुना, तीनों फ़तावा ह़ज़रत की फ़हम व ज़का और तह़क़ीक़ व जुस्तुजू का मुंह बोलता शाहकार हैं। बेशक जनाब की ज़हानत और इस्तिम्बात लाइक़े सद

सताइश और क़ाबिले तह़सीन और आफ़रीन हैं। आप ने जिस आसानी से ऐसे मुश्किल मसाइल को आ़म फ़हम अन्दाज़ में ढाल कर ह़ल फ़रमाया है वोह आप ही का ह़िस्सा है। बुज़ुर्गाने दीन और उ़लमाए उम्मत के मुख़्तलिफ़ अक़्वाल को जिस उ़म्दगी से बयान फ़रमाया है और जिस हुस्नो ख़ूबी से निभाया है वोह आप की इन्शिराह़े सद्र और उ़लूमे अ़क़्ली और नक़्ली में महारते ताम्मा का मज़हरे अतम्म है। ख़ुसूसन त़र्ज़े इस्तिदलाल और अन्दाज़े तह़रीर बाइसे रश्क हैं।

मैं हर सेह फ़तावा में आप से मुत्तफ़िक़ हूं। ख़ुसूसन विडियो केसेट, टीवी और फ़िल्म के बारे में जिस क़-दर अ़रक़ रेज़ी से जनाब ने तह़क़ीक़ फ़रमाई और फिर जिस ख़ूबसूरती से इन ह़क़ाइक़ की रौशनी में जाइज़ व ना जाइज़ सूरतों में इम्तियाज़ करते हुए फ़तवा क़लमबन्द फ़रमाया वोह क़ाबिले तक़्लीद है।''

(विडियो, टीवी का शर-ई इस्ते'माल, स. 10)

اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ उ़-लमाए अहले सुन्नत के अक़्वाल से ज़ाहिर है कि ***मूवी फ़िल्म तस्वीर के हुक्म में नहीं है और अज़ रूए शर-अ़ जाइज़ उमूर की मूवी फ़िल्म देखना, बनाना और बनवाना जाइज़ है।***

दौरे ह़ाज़िर में विडियो का मस्अला इतना आ़म हो चुका है कि अगर किसी बड़े स्टोर में सामान ख़रीदने जाना पड़े तो विडियो का सामना करना पड़ता है बल्कि तरक़्क़ी याफ़्ता मुमालिक या जहां पैसे की रेलपेल होती है वहां तो उ़मूमन हर स्टोर ही में विडियो केमरे लगे होते हैं।

इसी त़रह़ तक़रीबन हर ह़स्सास जगह पर ह़िफ़ाज़त (Security) के पेशे नज़र विडियो केमरे नस्ब किये जाते हैं। और आने जाने वालों को कई ज़ावियों से देखने के लिये ***एक से ज़ाइद विडियो केमरे नस्ब किये जाते हैं।*** सरकारी तन्सीबात पर ख़ुसूसी इन्तिज़ाम किया जाता है। यूंही हवाई जहाज़ से सफ़र किया जाए तो हवाई अड्डे में दाख़िल होने से ले कर हवाई जहाज़ में बैठने तक और इसी त़रह़ जहाज़ में बैठने के बा'द हवाई जहाज़ से उतरने तक बल्कि इस के बा'द भी एरपोर्ट से निकलने तक मुसल्सल विडियो केमेरे चलते रहते हैं और आदमी की विडियो फ़िल्म बनती रहती है।

यूंही ज़ियारते ह़-रमैन शरीफ़ैन के लिये अगर ब ज़रीए़ हवाई जहाज़ जाया जाए तो उ़मूमन अपने मुल्क के एरपोर्ट से ले कर अ़रब शरीफ़ के एरपोर्ट तक ***मुसल्सल केमरे की ज़द में रहना पड़ता है।*** फिर मुआ़मला यहां तक ही नहीं रहता बल्कि ***मस्जिदैने*** करीमैन में दाख़िल होने के बा'द से निकलने तक ***मुसल्सल केमरे के ज़रीए़ से कई अत़राफ़ से निगाहों में रखा जाता है।***

मज़्कूरा उमूर को ज़ेहन में रखते हुए इस बात पर ग़ौर फ़रमाएं कि अ़रबो अ़जम, मश्रिक़ व मग़रिब के सेंकड़ों उ़-लमा व मशाइख़ जहाज़ों में सफ़र करते हैं, यूरप व अम्रीका व इंग्लेन्ड व अफ़्रीक़ा में आए दिन तब्लीगे़ दीन के लिये आते जाते रहते हैं। हिन्दो पाक से चन्द मशाहीर के नाम लिखे जाते हैं जो नफ़्ली ह़ज व उ़म्रह की सआ़दत ह़ासिल करने और तब्लीगे़ दीन के लिये दुन्या के मुख़्तलिफ़ मुमालिक में आते जाते रहे हैं और इन में बहुत से अब भी आते जाते हैं। म-सलन हिन्द

www.dawateislami.net

से फ़क़ीहे आ'ज़मे हिन्द ह़ज़रत अ़ल्लामा ***शरीफ़ुल ह़क़ अम्जदी*** رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ, मुह़द्दिसे कबीर अ़ल्लामा ***ज़ियाउल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी,*** मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द ह़ज़रत अ़ल्लामा ***अख़्तर रज़ा अज़हरी,*** अबुल बरकात ह़ज़रत अ़ल्लामा ***अमीन मियां बरकाती*** मारहरवी متعنا اللّٰہ تعالیٰ بفیوضھم इसी त़रह़ और दीगर उ़-लमा व मशाइख़ और पाकिस्तान से ह़ज़रत अ़ल्लामा मुफ़्ती ***अ़ब्दुल क़य्यूम हज़ारवी,*** कसीरुत्तसानीफ़ जामेए़ मा'कूल व मन्कूल ह़ज़रते अ़ल्लामा ***फ़ैज़ अह़मद उवैसी,*** मुनाज़िरे इस्लाम शैख़ुल ह़दीस वत्तफ़्सीर साह़िबे ''मक़ामे रसूल'' صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रत अ़ल्लामा ***मन्जूर अह़मद फ़ैज़ी,*** उस्ताज़ुल असातिज़ा ह़ज़रत अ़ल्लामा ***मुह़म्मद ह़सन ह़क़्क़ानी,*** मुफ़्ती ***अह़मद मियां बरकाती,*** मौलाना ***अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ह़नफ़ी,*** ह़ज़रत मौलाना ***तुराबुल ह़क़ शाह*** साह़िब, अ़ल्लामा मौलाना ***अ़ब्दुल ह़कीम शरफ़*** क़ादिरी वग़ैरहुम دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ अब कोई अ़क़्ल से पैदल ही होगा जो مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इन मज़्कूरा मशाहीर और दीगर उ़लमा पर फ़िस्क़ का फ़त्वा लगाने की जुरअत करेगा। अल्लाह तआ़ला ऐसी उल्टी अ़क़्ल के शर से सारी उम्मत को मह़फ़ूज़ फ़रमाए।

आज कुफ़्फ़ारे बद अत़्वार अस्लिह़े के साथ साथ टीवी और विडियो के ज़रीए़ से ***मुसल्मानों के घरों में पहुंच कर इस्लाम के ख़िलाफ़ ज़हर उगल रहे हैं।*** مَعَاذَاللّٰہ ثم مَعَاذَاللّٰہ अपने बात़िल दलाइल के ज़रीए़ से इस्लाम और पैग़म्बरे इस्लाम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बे ऐ़ब शान में ***गुस्ताख़ियां*** कर रहे हैं। यूंही तमाम अक़्साम के गुमराह मज़ाहिब ने टीवी और विडियो को अपने ***अ़क़ाइदे बात़िला की तरवीज*** का ज़रीआ़ बना लिया है। जिस का जो दिल चाहे बकता है। इन लोगों ने मुख़्तलिफ़ टीवी चेनल्ज़ के अवक़ात ख़रीद रखे हैं बल्कि क़ादियानियों ने तो एक अ़रसे से पूरा चेनल शुरूअ़ किया हुवा है जिस पर वोह बा क़ाइ़दगी से रोज़ाना कई घन्टे ***अपने गुमराह कुन अ़क़ाइ़द*** का परचार करते हैं।

www.dawateislami.net

और फ़ी ज़माना हमारे मुआ़शरे का येह ह़ाल है कि टीवी और विडियो नई नस्ल की घुट्टी में पड़े हुए हैं। टीवी और विडियो मुआ़शरे के अफ़राद के लिये तफ़्रीह़ का सामान भी है और ह़ुसूले मा'लूमात का उ़मूमी ज़रीआ़ भी है। येह ह़क़ीक़त है कि बहुत से लोग अपने अक्सर अवक़ात टीवी के सामने ही गुज़ारते हैं। लिहाज़ा जो कुछ टीवी में देखते हैं ख़्वाह बुरा देखें या भला देखें। उस से मुतअस्सिर हो जाते हैं और रफ़्ता रफ़्ता उसे अपना लेते हैं और तहज़ीब का ह़िस्सा समझने लगते हैं। इन तमाम उमूर को सामने रखते हुए येह बात बिल्कुल वाज़ेह़ हो जाती है कि ***मूवी बनवाना जाइज़ है।***

कुतुबे फ़िक़्ह़िय्या में इस क़िस्म की कई मिसालें मिल जाती हैं कि उ़लमा ने ह़ालाते ज़माना को देखते हुए राजेह़ अक़्वाल को छोड़ कर मरजूह़ अक़्वाल पर भी फ़त्वे दिये जैसा कि ख़ातिमुल फ़ुक़हा अ़ल्लामा इब्ने आ़बिदीन शामी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं कि, ***''फ़क़ीह अबुल्लैस समरक़न्दी*** رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं कि पहले मैं तीन बातों की मुमानअ़त का फ़त्वा दिया करता था और अब इन के जवाज़ का फ़त्वा देता हूं। पहले मैं फ़त्वा देता था कि ***ता'लीमे कुरआन पर उजरत लेना ह़लाल नहीं,*** इसी त़रह़ फ़त्वा देता था कि आ़लिम के लिये जाइज़ नहीं कि वोह सुल्त़ान (बादशाह) की

सोह़बत इख़्तियार करे और आ़लिम के लिये जाइज़ नहीं कि वोह देहातों में उजरत पर वा'ज़ करने जाए । मगर अब ता'लीमे क़ुरआन के ज़ियाअ़ के ख़ौफ़, लोगों की ह़ाजत की और देहातों की जहालत की वजह मैं ने इन से रुजूअ़ कर लिया ।''

(रसाइल इब्ने आ़बिदीन, जिल्द :1, स-फ़ह़ा:157, सुहैल एकेडमी लाहौर)

लेकिन इस के साथ इस बात का ख़याल रखना निहायत ज़रूरी है कि येह हुक्म ***जाइज़ व ह़लाल प्रोग्रामों के बारे में है,*** जैसे उ-लमाए अहले सुन्नत के बयानात, तिलावते क़ुरआन और ना'त की मूवी । ***और शादी के मौक़अ़ पर जो औ़रतों की बे पर्दा मूवियां यूंही फ़िल्मों, डिरामों, गानों, बाजों की मूवियां बनाई जाती हैं वोह सब ना जाइज़ व ह़राम हैं ।***

وَاللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ اَعْلَم عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

क-तबह

अल मुतख़स्सिस फ़िल फ़िक़्हुल इस्लामी

मुह़म्मद अ़क़ील रज़ा अल अ़त्तारिय्युल म-दनी

24 शा'बान 1426 हि. 29 सितम्बर 2005 ई.

अल जवाबो सह़ीह़

www.dawateislami.net

अबुस्सालेह़ मुह़म्मद क़ासिमुल क़ादिरी

26 शा'बान 1426 हि. यकुम अक्तूबर 2005 ई.